1. एक नई दीपावली

(कविता)

पंच दिवसीय,
प्रकाश पर्व
दीपावली का त्योहार है
प्रज्ज्वलित दीपक की कतारों से,
काली अमावस रात भी
आज तो गई, हार है।
कोना कोना प्रकाशमान है
अंधेरे का भी चूर हुआ ,
अभिमान है
जगमग ज्योति मुस्कुरा रही है
खुशियों के इस कीमती पल को
चुरा रही है।
प्रकाश पर्व ,
रंग-बिरंगी रोशनी से नहाया है
हर दिल में उत्साह उमंग छाया है।
अचानक एक विचार है आया
शीघ्र ही,
मन में आनंद भी, लाया
क्यों न, इस दीपावली
कुछ नवीन काम करते हैं
कभी न भूलने वाली,
एक ऐसी शाम करते हैं।
चलिए हम,
छोटे गरीब बच्चों के,
आशियानों को भी प्रकाशित
करते हैं
दीयों की चमकीली रोशनी से
उन्हें भी आच्छादित करते हैं।
उनके चेहरे पर आई खुशी से
हमारी खुशियां भी
करोड़ों गुना हो जाएगी
इन्हीं कमाई दुआओं से
जिंदगी हमारी ,
बड़ी खुशनुमा हो जाएगी।
इस दीपावली, स्वयं दीपक बन
किसी के,
अंधकारमय जीवन को
प्रसन्नता के झिलमिल प्रकाश से
जगमग, कर देते हैं
हर चेहरा हंसता मुस्कुराता दिखे
आओ, इस दीपावली
हर निराश मन को,
नूतनता के उल्लास से
भर देते हैं।

2. दीपावली की रात

गहरी काली
अमावस की रात
आज तो उसकी क्या है बात।
प्रकाश पर्व दीपावली पर,
रंगीन रोशनी से श्रृंगार कर
सजी संवरी दुल्हन लग रही है
सांवला रंग,
सलोना रुप
दीपों की रोशनी से नहाई
वो श्यामल रात,
आज तो खुशी में
मगन लग रही है।
नज़ाकत लिए वो रात
नववधू सी शरमाई व लजाई है
आज तो झिलमिल रोशनी में
बहुतायत सुंदरता पाई है।
आसमानी आतिशबाजी
दिखा रही कमाल की कलाबाजी
वो तेज रोशनी मेहताब की
मानों चुपके से चुरा ली हो
चमक , आफताब की।
लाखों सितारों से भरी,
फुलझड़ी शरारती
चमचमा कर, देखो तो
कैसे है इतराती।
गोल गोल नृत्य करती
चरखी रानी
खुशियों से भरी,
घूम घूम कर हो गई दिवानी।
एक अनार सौ बीमार
इससे कोई न पाएं पार
ऊंचा उठता ऐसे,
गगन को चूमता, जैसे।
रोशनी की महफ़िल में
सब मगन ही थे, कि
अचानक तेज आवाज हुई
बड़े-बड़े बमों के आने से ,
रोमांचक एक आगाज़ हुई।
बंदूक भी कहां पीछे रहती
पूरे जोश से भर
दहाड़ रही थी
कुछ छोटे बमों को डराकर
पछाड़ रही थी।
आज पटाखे सारे बने थे
बाराती
छोटे छोटे दीये थे, साथी
सोलह श्रृंगार किए उस
सांवली रात्रि को, निहार रहे थे
सौंदर्य इतना अनुपम था कि,
जैसे लगता अपना भी ,
दिल हार रहे थे।
दीपक की कतारें प्रज्ज्वलित हो
मंगलगीत गाने लगी
एक सुमधुर सा संगीत भी
बजाने लगी।
खुशियों की महफ़िल में,
कभी दुश्वारियों की, बात न आती
प्रकाश पर्व धन्यवाद तुम्हारा
तुम न होते तो,
ये दिलकश रात, न आती।।

- मीनू अग्रवाल, वाराणसी